समावेशी विकास की भारतीय अवधारणाः दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद की प्रासंगिकता

प्राप्तिः 01.06.2026
स्वीकृतः 19.06.2026

54

डॉ सुदीप
(राजनीति विज्ञान विभाग)
मेरठ कॉलेज, मेरठ, उ0प्र0
ईमेलः *sudeepbasyan@gmail.com*

सारांश

समावेशी विकास की अवधारणा वर्तमान समय में अत्यंत महत्वपूर्ण बन गई है, क्योंकि केवल आर्थिक वृद्धि समाज के सभी वर्गों तक समान रूप से लाभ नहीं पहुँचा पा रही है। इस संदर्भ में दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद एक संतुलित और समग्र विकास दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। यह विचारधारा मानव को केवल आर्थिक इकाई न मानकर उसके शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक आयामों के समन्वित विकास पर बल देती है। भारतीय दृष्टिकोण, पश्चिमी मॉडल की तुलना में, सामाजिक न्याय, नैतिकता और पर्यावरणीय संतुलन को अधिक महत्व देता है। 'अंत्योदय' की अवधारणा के माध्यम से यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया जाता है कि विकास का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में, जब असमानता, पर्यावरण संकट और नैतिक चुनौतियाँ बढ़ रही हैं, तब एकात्म मानववाद एक व्यावहारिक और टिकाऊ विकास मॉडल के रूप में उभरता है, जो समावेशी और न्यायपूर्ण समाज के निर्माण की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करता है।

मुख्य शब्द

समावेशी विकास, एकात्म मानववाद, दीनदयाल उपाध्याय, अंत्योदय, सतत विकास, सामाजिक न्याय, आर्थिक असमानता, वैश्वीकरण, ग्रामीण विकास, आत्मनिर्भर भारत।

प्रस्तावना

समकालीन वैश्विक परिदृश्य में "समावेशी विकास" एक केंद्रीय विमर्श के रूप में उभरकर सामने आया है। आर्थिक वृद्धि की तीव्र गति के बावजूद विश्व के अनेक देशों, विशेषकर विकासशील राष्ट्रों में, आय–वितरण की असमानता, सामाजिक बहिष्करण, बेरोजगारी तथा पर्यावरणीय संकट जैसी समस्याएँ लगातार गहराती जा रही हैं। इस संदर्भ में यह प्रश्न महत्वपूर्ण हो जाता है कि क्या केवल सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में वृद्धि को ही विकास का मानक माना जा सकता है, अथवा विकास को मानव–केंद्रित, न्यायसंगत एवं संतुलित दृष्टिकोण से भी समझने की आवश्यकता है।[1]

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.054

भारतीय चिंतन परंपरा में विकास की अवधारणा सदैव समग्र रही है, जिसमें व्यक्ति के भौतिक, मानसिक, बौद्धिक तथा आध्यात्मिककृसभी आयामों के संतुलित उत्कर्ष पर बल दिया गया है। इसी परिप्रेक्ष्य में दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित "एकात्म मानववाद" एक वैकल्पिक विकास–दर्शन के रूप में सामने आता है, जो न केवल पश्चिमी पूंजीवादी और समाजवादी प्रतिमानों की सीमाओं की आलोचना करता है, बल्कि एक ऐसे समाज की कल्पना प्रस्तुत करता है जहाँ विकास का केंद्र "मानव" हो, न कि केवल उत्पादन या उपभोग।[2]

एकात्म मानववाद का मूल उद्देश्य व्यक्ति, समाज और प्रकृति के बीच संतुलित एवं सामंजस्यपूर्ण संबंध स्थापित करना है। यह विचारधारा "अंत्योदय" अर्थात् समाज के अंतिम व्यक्ति के उत्थान को विकास का वास्तविक मानदंड मानती है। वर्तमान समय में जब वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति और बाजारवाद के प्रभाव से सामाजिक असमानताएँ और सांस्कृतिक विघटन की प्रवृत्तियाँ बढ़ रही हैं, तब एकात्म मानववाद की प्रासंगिकता और भी अधिक बढ़ जाती है। यह दर्शन न केवल समावेशी विकास की भारतीय अवधारणा को सुदृढ़ करता है, बल्कि नीति–निर्माताओं को एक नैतिक और मानवीय दिशा भी प्रदान करता है।[3]

वैचारिक आधारः एकात्म मानववाद की दार्शनिक संरचना

दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित एकात्म मानववाद भारतीय चिंतन परंपरा का एक ऐसा आधुनिक पुनर्पाठ है, जिसमें मनुष्य, समाज और प्रकृति के बीच अंतर्संबंधों को समग्र रूप से समझने का प्रयास किया गया है। यह विचारधारा न तो केवल आर्थिक विकास तक सीमित है और न ही केवल आध्यात्मिक विमर्श तकय बल्कि यह जीवन के भौतिक और आध्यात्मिक दोनों आयामों के संतुलित समन्वय पर आधारित है। उपाध्याय का मानना था कि यदि विकास की प्रक्रिया में मनुष्य के सभी पक्ष–शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा–का समुचित विकास नहीं होता, तो वह विकास अधूरा और असंतुलित रह जाता है।[4]

एकात्म मानववाद का मूल आधार "समग्रता" (Holism) है, जिसमें व्यक्ति को एक स्वतंत्र इकाई के रूप में नहीं, बल्कि समाज और प्रकृति से जुड़े एक जीवंत अंग के रूप में देखा जाता है। पश्चिमी चिंतन में जहाँ व्यक्ति और समाज के बीच द्वंद्व की स्थिति दिखाई देती है, वहीं उपाध्याय ने दोनों के बीच सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किया। उनके अनुसार, व्यक्ति का कल्याण समाज के कल्याण से जुड़ा हुआ है और समाज की उन्नति तभी संभव है जब प्रत्येक व्यक्ति का विकास सुनिश्चित हो।

"वसुधैव कुटुम्बकम"– यह विचार सम्पूर्ण मानवता को एक परिवार के रूप में देखने की प्रेरणा देता है, जो एकात्म मानववाद की मूल भावना से पूर्णतः मेल खाता है।

उपाध्याय के अनुसार, मानव जीवन चार आयामों–शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा–से मिलकर बना है। इन चारों का संतुलित विकास ही वास्तविक प्रगति का आधार है। पश्चिमी विकास मॉडल प्रायः भौतिक समृद्धि (शरीर) और बौद्धिक प्रगति (बुद्धि) तक ही सीमित रहते हैं, जबकि मन और आत्मा जैसे सूक्ष्म आयामों की उपेक्षा कर देते हैं। परिणामस्वरूप, आधुनिक समाज में नैतिक संकट, मानसिक तनाव और सामाजिक विघटन जैसी समस्याएँ उभरती हैं। एकात्म मानववाद इन सभी आयामों के समन्वय के माध्यम से एक संतुलित और नैतिक समाज की परिकल्पना प्रस्तुत करता है।[5]

"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः"– यह श्लोक समावेशी और सर्वांगीण कल्याण की उस भावना को अभिव्यक्त करता है, जिसे एकात्म मानववाद अपने केंद्र में रखता है।

इस विचारधारा का एक महत्वपूर्ण पहलू "धर्म" की पुनर्व्याख्या है। यहाँ धर्म का अर्थ किसी विशेष संप्रदाय या पंथ से नहीं, बल्कि उन नैतिक नियमों और कर्तव्यों से है जो समाज को संतुलित और व्यवस्थित बनाए रखते हैं। उपाध्याय के अनुसार, राज्य और समाज का संचालन "धर्माधारित" होना चाहिए, ताकि सत्ता का प्रयोग केवल भौतिक लाभ के लिए न होकर व्यापक सामाजिक हित के लिए किया जा सके।[6]

एकात्म मानववाद में आर्थिक व्यवस्था को भी नैतिकता और सामाजिक न्याय के साथ जोड़ा गया है। उपाध्याय ने न तो पूंजीवाद की असीमित स्वतंत्रता को स्वीकार किया और न ही समाजवाद की पूर्ण राज्य–नियंत्रण की अवधारणा कोय बल्कि उन्होंने एक ऐसे वैकल्पिक मॉडल की वकालत की, जिसमें उत्पादन और वितरण का उद्देश्य समाज के अंतिम व्यक्ति तक लाभ पहुँचाना हो। यही कारण है कि उनके विचारों में "अंत्योदय" का सिद्धांत विशेष महत्व रखता है।[7] एकात्म मानववाद का वैचारिक आधार भारतीय संस्कृति, नैतिकता और समग्र दृष्टिकोण पर आधारित है। यह विचारधारा आज के समय में भी इसलिए प्रासंगिक है क्योंकि यह विकास को केवल आर्थिक संकेतकों तक सीमित न रखकर उसे मानवीय, नैतिक और सामाजिक आयामों से जोड़ती है, जिससे एक संतुलित और समावेशी समाज की स्थापना संभव हो सके।

भारतीय बनाम पश्चिमी दृष्टिकोण– समावेशी विकास की अवधारणा

समावेशी विकास की अवधारणा को समझने के लिए भारतीय और पश्चिमी दृष्टिकोण के बीच का अंतर अत्यंत महत्वपूर्ण है। पश्चिमी चिंतन में विकास का आधार मुख्यतः आर्थिक वृद्धि, उत्पादन, उपभोग और बाजार–केन्द्रित संरचना पर आधारित रहा है। औद्योगिक क्रांति के बाद विकसित हुए पूंजीवादी मॉडल में व्यक्ति को एक उपभोक्ता और उत्पादक के रूप में देखा गया, जहाँ सफलता का मापदंड आय, उत्पादन और सकल घरेलू उत्पाद (GDP) बन गया। इसके विपरीत, भारतीय दृष्टिकोण में विकास केवल भौतिक समृद्धि तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के नैतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक उत्थान को भी समान रूप से महत्व देता है।

पश्चिमी विकास मॉडल– चाहे वह पूंजीवाद हो या समाजवाद–दोनों में एक प्रकार की एकांगी प्रवृत्ति दिखाई देती है। पूंजीवाद में व्यक्तिगत स्वतंत्रता और बाजार की शक्ति को सर्वोच्च माना गया, लेकिन इसके परिणामस्वरूप आर्थिक असमानता, संसाधनों का असंतुलित वितरण और सामाजिक विभाजन बढ़ा। वहीं समाजवाद ने समानता की बात तो की, परंतु राज्य के अत्यधिक नियंत्रण ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता को सीमित कर दिया। इस प्रकार, दोनों ही प्रणालियाँ मानव जीवन के समग्र आयामों को संतुलित रूप से संबोधित करने में असफल रहीं।

इसके विपरीत, दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित एकात्म मानववाद एक ऐसा वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जिसमें विकास को बहुआयामी रूप में देखा गया है। इस विचारधारा के अनुसार, मानव केवल शरीर नहीं, बल्कि मन, बुद्धि और आत्मा का समन्वित रूप है। अतः विकास का लक्ष्य इन सभी स्तरों पर संतुलन स्थापित करना होना चाहिए। भारतीय परंपरा में 'धर्म' को जीवन के

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.054

संचालन का मूल आधार माना गया है, जो केवल धार्मिक आस्था नहीं बल्कि कर्तव्य, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व का द्योतक है। यही तत्व विकास को मानवीय और समावेशी बनाते हैं।

भारतीय दृष्टिकोण में 'अंत्योदय' की अवधारणा विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिसका अर्थ है समाज के अंतिम व्यक्ति का उत्थान। यह विचार पश्चिमी "जतपबासम–कवूद जीमवतल" से भिन्न है, जहाँ यह माना जाता है कि आर्थिक विकास का लाभ धीरे–धीरे समाज के निचले वर्गों तक पहुँच जाएगा। भारतीय दृष्टिकोण इस धारणा को पर्याप्त नहीं मानता, बल्कि सीधे तौर पर वंचित और कमजोर वर्गों के सशक्तिकरण पर बल देता है। इस प्रकार, समावेशी विकास केवल एक आर्थिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय और समान अवसर की स्थापना का माध्यम बनता है।

भारतीय विकास मॉडल प्रकृति के साथ संतुलन को भी अत्यंत महत्वपूर्ण मानता है। जहाँ पश्चिमी मॉडल में अंधाधुंध औद्योगिकीकरण और संसाधनों के दोहन को प्रगति का प्रतीक माना गया, वहीं भारतीय चिंतन में प्रकृति को 'माता' के रूप में देखा गया है। इसलिए यहाँ विकास का अर्थ पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखते हुए संसाधनों का उपयोग करना है। आज के समय में जब जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण संकट वैश्विक चिंता का विषय बन चुके हैं, तब भारतीय दृष्टिकोण की यह विशेषता और अधिक प्रासंगिक हो जाती है। जहाँ, पश्चिमी विकास मॉडल जहाँ भौतिक समृद्धि पर केन्द्रित है, वहीं भारतीय दृष्टिकोण समग्र, संतुलित और मानवीय विकास की ओर उन्मुख है। दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद इस भारतीय सोच को व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करता है, जो वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में एक वैकल्पिक और अधिक टिकाऊ विकास मार्ग प्रदान कर सकता है।

एकात्म मानववाद और समावेशी विकास का संबंध

समावेशी विकास और दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित एकात्म मानववाद के बीच गहरा और स्वाभाविक संबंध स्थापित होता है। जहाँ समावेशी विकास का उद्देश्य समाज के प्रत्येक वर्ग–विशेषकर वंचित, गरीब और हाशिए पर स्थित समुदायों–को विकास की मुख्यधारा में षामिल करना है, वहीं एकात्म मानववाद इस लक्ष्य को दार्शनिक और नैतिक आधार प्रदान करता है। यह विचारधारा विकास को केवल आर्थिक वृद्धि तक सीमित नहीं रखती, बल्कि उसे मानव के समग्र उत्कर्ष से जोड़ती है। एकात्म मानववाद के केंद्र में 'अंत्योदय' की अवधारणा निहित है, जिसका अर्थ है समाज के अंतिम व्यक्ति का उत्थान। यह सिद्धांत समावेशी विकास की आत्मा के समान है। पश्चिमी विकास मॉडल में जहाँ यह अपेक्षा की जाती है कि आर्थिक समृद्धि ऊपर से नीचे की ओर स्वतः प्रवाहित होगी, वहीं एकात्म मानववाद प्रत्यक्ष रूप से सबसे कमजोर वर्ग को प्राथमिकता देता है। इस प्रकार, यह विकास को अधिक न्यायपूर्ण और मानवीय बनाता है।

"अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसा।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम।।"

एकात्म मानववाद व्यक्ति, समाज और प्रकृति के बीच संतुलन स्थापित करने पर बल देता है। इस विचार के अनुसार, यदि विकास केवल व्यक्ति की भौतिक आवश्यकताओं तक सीमित रह जाए और सामाजिक या पर्यावरणीय पक्षों की उपेक्षा हो, तो वह अधूरा और असंतुलित होगा। समावेशी विकास भी इसी संतुलन की मांग करता है, जहाँ आर्थिक प्रगति के साथ–साथ सामाजिक समानता

और पर्यावरणीय स्थिरता सुनिश्चित की जाती है। उदाहरणस्वरूप, ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करना, स्थानीय संसाधनों का संरक्षण करना और पारंपरिक ज्ञान को बढ़ावा देना–ये सभी पहलू एकात्म मानववाद और समावेशी विकास दोनों में समान रूप से महत्वपूर्ण हैं।

दूसरी ओर, एकात्म मानववाद विकेंद्रीकरण की अवधारणा को भी महत्व देता है। यह मानता है कि वास्तविक विकास तभी संभव है जब स्थानीय स्तर पर निर्णय लेने की क्षमता और संसाधनों का नियंत्रण हो। ग्राम–आधारित अर्थव्यवस्था और स्वावलंबन की भावना इस विचारधारा के मूल में है। समावेशी विकास के संदर्भ में यह दृष्टिकोण अत्यंत प्रासंगिक है, क्योंकि इससे स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाया जा सकता है और क्षेत्रीय असमानताओं को कम किया जा सकता है।

"तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम।" (ईषावास्य उपनिषद्)

यह श्लोक संसाधनों के संतुलित और न्यायपूर्ण उपयोग की प्रेरणा देता है, जो समावेशी विकास का एक प्रमुख तत्व है।

एकात्म मानववाद में नैतिकता और कर्तव्यबोध को भी विशेष महत्व दिया गया है। यह विचारधारा केवल अधिकारों की बात नहीं करती, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व को भी उतना ही आवश्यक मानती है। समावेशी विकास के लिए यह आवश्यक है कि समाज के सभी वर्ग अपने कर्तव्यों का पालन करें और कमजोर वर्गों के प्रति संवेदनशील रहें। इस प्रकार, यह दृष्टिकोण विकास को केवल सरकारी नीतियों तक सीमित नहीं रखता, बल्कि उसे सामाजिक चेतना और सहभागिता का परिणाम मानता है।

समकालीन संदर्भ में, जब वैश्वीकरण और तकनीकी प्रगति के कारण आर्थिक असमानताएँ बढ़ रही हैं, तब एकात्म मानववाद का यह समन्वित दृष्टिकोण अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है। यह न केवल विकास के उद्देश्य को पुनर्परिभाषित करता है, बल्कि उसके साधनों को भी मानवीय और न्यायपूर्ण बनाता है। उदाहरण के लिए, आत्मनिर्भरता, स्थानीय उत्पादन, और सतत विकास जैसे विचार आज की नीतियों में प्रमुख स्थान पा रहे हैं, जो एकात्म मानववाद के सिद्धांतों के अनुरूप हैं। इस प्रकार, समावेशी विकास और एकात्म मानववाद एक–दूसरे के पूरक हैं। जहाँ समावेशी विकास व्यावहारिक लक्ष्य प्रस्तुत करता है, वहीं एकात्म मानववाद उसे नैतिक, सांस्कृतिक और दार्शनिक आधार प्रदान करता है। दीनदयाल उपाध्याय के विचार आज भी एक ऐसे विकास मॉडल की ओर संकेत करते हैं, जो न केवल आर्थिक रूप से सशक्त हो, बल्कि सामाजिक रूप से न्यायपूर्ण और पर्यावरणीय रूप से संतुलित भी हो।

समकालीन संदर्भ में प्रासंगिकता

वर्तमान वैश्विक और भारतीय परिप्रेक्ष्य में समावेशी विकास की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक महसूस की जा रही है। आर्थिक प्रगति के बावजूद समाज में असमानता, बेरोजगारी, क्षेत्रीय विषमताएँ और पर्यावरणीय संकट जैसी चुनौतियाँ लगातार बढ़ रही हैं। ऐसे समय में दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित एकात्म मानववाद एक वैकल्पिक और संतुलित विकास दृष्टिकोण के रूप में उभरता है, जो समकालीन समस्याओं के समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.054

सबसे पहले, आर्थिक असमानता की समस्या को देखें तो यह स्पष्ट होता है कि तीव्र आर्थिक विकास के बावजूद समाज के विभिन्न वर्गों के बीच आय और अवसरों का अंतर बढ़ता जा रहा है। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच विकास की खाई भी गहरी हुई है। एकात्म मानववाद इस असंतुलन को दूर करने के लिए 'अंत्योदय' की अवधारणा को सामने रखता है, जिसमें विकास का केंद्र बिंदु समाज का सबसे अंतिम व्यक्ति होता है। आज की सरकारी नीतियों–जैसे ग्रामीण रोजगार योजनाएँ, वित्तीय समावेशन और सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रम–में इस विचार की झलक स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है।[17]

दूसरे, वैश्वीकरण और उदारीकरण के दौर में आर्थिक अवसरों का विस्तार तो हुआ है, लेकिन इसके साथ ही स्थानीय उद्योगों और पारंपरिक आजीविकाओं पर दबाव भी बढ़ा है। एकात्म मानववाद आत्मनिर्भरता और स्थानीय संसाधनों के उपयोग पर बल देता है, जो वर्तमान 'आत्मनिर्भर भारत' जैसे अभियानों में परिलक्षित होता है। यह दृष्टिकोण न केवल स्थानीय अर्थव्यवस्था को सशक्त करता है, बल्कि रोजगार सृजन और क्षेत्रीय संतुलन को भी बढ़ावा देता है। इस प्रकार, यह विकास को अधिक स्थायी और समावेशी बनाने में सहायक है।[18]

तीसरे, पर्यावरणीय संकट–जैसे जलवायु परिवर्तन, संसाधनों का अत्यधिक दोहन और प्रदूषण–आज वैश्विक चिंता का विषय बन चुके हैं। पश्चिमी विकास मॉडल में जहाँ प्राकृतिक संसाधनों के असीमित उपयोग को प्रगति का प्रतीक माना गया, वहीं एकात्म मानववाद प्रकृति के साथ संतुलन स्थापित करने की बात करता है। यह विचारधारा 'सतत विकास' के आधुनिक सिद्धांतों के साथ गहराई से मेल खाती है। आज जब भारत सहित विश्व के कई देश सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) की प्राप्ति के लिए प्रयासरत हैं, तब एकात्म मानववाद का यह पर्यावरण–संवेदनशील दृष्टिकोण अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है।[19]

चौथे, डिजिटल युग में तकनीकी प्रगति ने जीवन को सुविधाजनक तो बनाया है, लेकिन इसके साथ ही सामाजिक अलगाव, नैतिक संकट और मानवीय मूल्यों में गिरावट जैसी समस्याएँ भी सामने आई हैं। एकात्म मानववाद मानव के 'समग्र विकास' पर बल देता है, जिसमें केवल भौतिक उन्नति ही नहीं, बल्कि मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक उन्नति भी शामिल है। इस दृष्टिकोण से यह स्पष्ट होता है कि तकनीकी विकास को मानवीय मूल्यों के साथ संतुलित करना आवश्यक है, अन्यथा विकास एकांगी और असंतुलित हो जाएगा।[20]

पाँचवें, समकालीन भारत में नीति–निर्माण के स्तर पर भी एकात्म मानववाद की प्रासंगिकता देखी जा सकती है। विभिन्न सरकारी पहल–जैसे वित्तीय समावेशन (जन–धन योजना), सामाजिक सुरक्षा, ग्रामीण विकास कार्यक्रम और कौशल विकास योजनाएँ–समावेशी विकास की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। इन नीतियों का उद्देश्य केवल आर्थिक वृद्धि नहीं, बल्कि समाज के सभी वर्गों को विकास के लाभों से जोड़ना है। इस प्रकार, एकात्म मानववाद न केवल एक सैद्धांतिक अवधारणा है, बल्कि व्यावहारिक नीतियों के लिए भी मार्गदर्शक सिद्ध होता है।[21]

समकालीन समय में जब विकास के पारंपरिक मॉडल अपनी सीमाएँ प्रदर्शित कर रहे हैं, तब एकात्म मानववाद एक संतुलित, नैतिक और समावेशी विकल्प प्रस्तुत करता है। दीनदयाल उपाध्याय

के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने अपने समय में थे, क्योंकि वे मानव–केंद्रित, पर्यावरण–संतुलित और सामाजिक न्याय पर आधारित विकास की दिशा प्रदान करते हैं।

निष्कर्ष

समावेशी विकास की अवधारणा केवल आर्थिक उन्नति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी बहुआयामी प्रक्रिया है जिसमें सामाजिक न्याय, सांस्कृतिक संतुलन और पर्यावरणीय स्थिरता का समन्वय आवश्यक होता है। इसी संदर्भ में दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद एक सशक्त वैचारिक आधार प्रस्तुत करता है, जो विकास को मानवीय मूल्यों से जोड़ते हुए उसे अधिक संतुलित और व्यापक बनाता है। एकात्म मानववाद यह स्पष्ट करता है कि विकास का वास्तविक उद्देश्य केवल उत्पादन और उपभोग बढ़ाना नहीं, बल्कि व्यक्ति के षरीर, मन, बुद्धि और आत्मा के समुचित विकास को सुनिश्चित करना है। जब तक विकास प्रक्रिया में समाज के अंतिम व्यक्ति को केंद्र में नहीं रखा जाएगा, तब तक समावेशी विकास का लक्ष्य अधूरा ही रहेगा। इस दृष्टि से 'अंत्योदय' का सिद्धांत वर्तमान नीतिगत ढांचे के लिए एक महत्वपूर्ण मार्गदर्शक बन सकता है।

वर्तमान समय में, जब वैश्वीकरण, तकनीकी परिवर्तन और पर्यावरणीय संकट जैसी चुनौतियाँ लगातार उभर रही हैं, तब एकात्म मानववाद की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है। यह विचारधारा न केवल आर्थिक असमानताओं को कम करने की दिशा दिखाती है, बल्कि विकास को नैतिक और सतत बनाने की प्रेरणा भी देती है। विशेष रूप से भारतीय संदर्भ में, जहाँ विविधता और सामाजिक विषमताएँ व्यापक हैं, वहाँ यह दृष्टिकोण अधिक न्यायपूर्ण और संतुलित विकास मॉडल के निर्माण में सहायक सिद्ध हो सकता है।

अतः एकात्म मानववाद केवल एक सैद्धांतिक विचार नहीं, बल्कि समकालीन विकास चुनौतियों का व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करने वाली एक सशक्त अवधारणा है। यदि इसे नीतियों और व्यवहार में प्रभावी रूप से लागू किया जाए, तो यह भारत को एक ऐसे समावेशी और सतत विकास मार्ग पर अग्रसर कर सकता है, जहाँ विकास का लाभ समाज के प्रत्येक व्यक्ति तक समान रूप से पहुँच सके।

संदर्भ

1. World Bank (2020), World Development Report: Trading for Development in the Age of Global Value Chains, Washington D-C-, Pg. **45**.
2. उपाध्याय, दीनदयाल (1965), Integral Humanism, सुरुचि प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0सं0–**12**।
3. NITI Aayog (2018), Strategy for New India @75, Government of India, Pg. **67.**
4. उपाध्याय, दीनदयाल (1965), एकात्म मानववाद, भारतीय जनसंघ प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0सं0–**12–15**।
5. शर्मा, महेश (2018), "Integral Humanism and Its Contemporary Relevance", Indian Journal of Political Science, पृ0सं0–**45–48**।
6. मिश्रा, अरविंद (2020), भारतीय राजनीतिक चिंतन, ओरिएंट ब्लैकस्वान, नई दिल्ली, पृ0सं0–**102–105**।

7. Singh, Raghav (2021), "Deendayal Upadhyaya's Economic Philosophy", Economic and Political Review, Pg. **67–70.**
8. उपाध्याय, दीनदयाल (1965), एकात्म मानववाद, भारतीय जनसंघ प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0सं0–**45–52** ।
9. Sen, Amartya (1999), Development as Freedom, Oxford University Press, New Delhi, Pg. **87–102.**
10. Todaro, Michael P. & Smith, Stephen C. (2015), Economic Development, Pearson Education, Pg. **112–130**.
11. Shiva, Vandana (2005), Earth Democracy, South End Press, Pg. **23–40.**
12. उपाध्याय, दीनदयाल (1965), एकात्म मानववाद, भारतीय जनसंघ प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0सं0–**60–75** ।
13. NITI Aayog (2017), Three Year Action Agenda, Government of India, Pg. **15–28.**
14. Dreze, Jean & Sen, Amartya (2013), An Uncertain Glory: India and its Contradictions, Princeton University Press, Pg. **102–120**.
15. Sachs, Jeffrey (2015), The Age of Sustainable Development, Columbia University Press, Pg. **210–230.**
16. Government of India (2020), Atmanirbhar Bharat Abhiyan Reports, Ministry of Finance, Pg. **5–18.**
17. World Bank (2020), Poverty and Shared Prosperity Report, World Bank Publications, Pg. **35–48.**
18. Government of India (2021), Economic Survey of India, Ministry of Finance, Pg. **72-90.**
19. United Nations (2015), Transforming our World: The 2030 Agenda for Sustainable Development, UN Publications, Pg. **10–25.**
20. Sen, Amartya (2009), The Idea of Justice, Harvard University Press, Pg. **210–225.**
21. NITI Aayog (2022), SDG India Inde Report, Government of India, Pg. **40–58.**